

Original Article

COMMUNITY SINGING IN THE BRAJ REGION AS A FOLK-RELIGIOUS TRADITION

ब्रज क्षेत्र में समाज गायन एक लोक-देवालयी परंपरा के रूप में

Renu Gupta¹ , Dr. Ravjot Kaur² 

¹ Research Scholar of Performing Arts Music Lovely Professional University Phagwara, Punjab, India

² Associate Professor of Performing Arts Music, Lovely Professional University, Phagwara, Punjab, India



ABSTRACT

English: This research paper analyzes community singing in the Braj region as an important folk tradition. The Braj region is an ancient, religiously and culturally rich land of India, where devotion to Lord Krishna, the Raas Leela, Holi, Krishna Janmashtami, year-round folk traditions, and community life are deeply intertwined. In this region, Samaj Gayan is a folk singing tradition that is not merely a form of music but a powerful medium of religious experience, social unity, and cultural identity. Samaj Gayan is usually performed in temples, shrines, village squares, community gatherings, festivals, and religious occasions. Singers, musicians, and the audience participate as a group, making this singing a form of collective devotion. Through the singing, Lord Krishna, Radha, Gopal, the religious places of Braj, and episodes from Krishna's life are glorified. This process acts as a cultural bridge between the folk and the divine. In the Braj region, Samaj Gayan is considered a folk-cum-divine tradition because it originates from folk life and is connected with devotion to God. It uses the Braj language, which is characterized by simplicity, emotional depth, and profound devotion. The ragas, talas, singing style, and musical instruments used in the singing present a beautiful blend of ancient classical music and folk traditions. Thus, this tradition expresses the cultural soul of the Braj region. This research paper provides a detailed study of the historical background, origin, development, singing process, role of the singers, participation of the audience, and social significance of Samaj Gayan. It also analyzes how the Samaj Gayan tradition is being affected in the modern era due to urbanization, changing lifestyles, new media, and shifts in the interests of the younger generation. In many places, this tradition is becoming limited to specific occasions, raising questions about its preservation. In conclusion, it is clarified that Samaj Gayan is an important folk-cum-divine tradition of the Braj region, which is not merely a religious practice but a powerful force for social unity and cultural expression. Identity, human values, and collective consciousness play a crucial role in preserving this tradition. Documenting, researching, preserving, and transmitting this tradition to the new generation are essential for its survival.

Hindi: यह शोध पत्र ब्रज क्षेत्र में सामुदायिक गायन को एक महत्वपूर्ण लोक परंपरा के रूप में विश्लेषित करता है। ब्रज क्षेत्र भारत की एक प्राचीन, धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध भूमि है, जहाँ भगवान कृष्ण के प्रति भक्ति, रास लीला, होली, कृष्ण जन्माष्टमी, साल भर चलने वाली लोक परंपराएँ और सामुदायिक जीवन आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं। इस क्षेत्र में, समाज गायन एक लोक गायन परंपरा है जो मात्र संगीत का एक रूप नहीं बल्कि धार्मिक अनुभव, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक पहचान का एक सशक्त माध्यम है। समाज गायन आमतौर पर मंदिरों, तीर्थस्थलों, ग्राम चौकों, सामुदायिक समारोहों, त्योहारों और धार्मिक अवसरों पर प्रस्तुत किया जाता है। गायक, संगीतकार और श्रोता एक समूह के रूप में भाग लेते हैं, जिससे यह गायन सामूहिक भक्ति का एक रूप बन जाता है। गायन के माध्यम से भगवान कृष्ण, राधा, गोपाल, ब्रज के धार्मिक स्थलों और कृष्ण के जीवन के प्रसंगों का गुणगान किया जाता है। यह प्रक्रिया लोक और दिव्य के

*Corresponding Author:

Email address: Renu Gupta (renugupta75891@gmail.com)

Received: 03 January 2026; Accepted: 06 February 2026; Published 07 March 2026

DOI: [10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6732](https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6732)

Page Number: 330-334

Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH

Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah

Online ISSN: 2350-0530, Print ISSN: 2394-3629

Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India

Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.

Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.

Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

बीच एक सांस्कृतिक सेतु का कार्य करती है। ब्रज क्षेत्र में, समाज गायन को लोक-सह-दिव्य परंपरा माना जाता है क्योंकि यह लोक जीवन से उत्पन्न होती है और ईश्वर के प्रति भक्ति से जुड़ी हुई है। इसमें ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है, जो सादगी, भावनात्मक गहराई और गहन भक्ति से परिपूर्ण है। राग, ताल, गायन शैली और गायन में प्रयुक्त वाद्ययंत्र प्राचीन शास्त्रीय संगीत और लोक परंपराओं का एक सुंदर मिश्रण प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार, यह परंपरा ब्रज क्षेत्र की सांस्कृतिक आत्मा को अभिव्यक्त करती है। यह शोध पत्र समाज गायन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उत्पत्ति, विकास, गायन प्रक्रिया, गायकों की भूमिका, श्रोताओं की भागीदारी और सामाजिक महत्व का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह इस बात का भी विश्लेषण करता है कि शहरीकरण, बदलती जीवनशैली, नए मीडिया और युवा पीढ़ी की रुचियों में बदलाव के कारण आधुनिक युग में समाज गायन परंपरा किस प्रकार प्रभावित हो रही है। कई स्थानों पर, यह परंपरा विशिष्ट अवसरों तक ही सीमित होती जा रही है, जिससे इसके संरक्षण पर प्रश्नचिह्न लग रहे हैं। अंत में, यह स्पष्ट किया जाता है कि समाज गायन ब्रज क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण लोक-सह-धार्मिक परंपरा है, जो मात्र एक धार्मिक प्रथा नहीं बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। पहचान, मानवीय मूल्य और सामूहिक चेतना इस परंपरा के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस परंपरा का दस्तावेजीकरण, शोध, संरक्षण और नई पीढ़ी तक इसका प्रसार इसके अस्तित्व के लिए आवश्यक है।

Keywords: Braj Region, Community Singing, Folk Devotional Tradition, Braj Language, Krishna Devotion, Folk Music, Cultural Heritage, ब्रज क्षेत्र, सामुदायिक गायन, लोक भक्ति परंपरा, ब्रज भाषा, कृष्ण भक्ति, लोक संगीत, सांस्कृतिक विरासत

प्रस्तावना

ब्रज क्षेत्र भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में भक्ति, संगीत और लोकआस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। यह क्षेत्र भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं से संबद्ध होने के कारण न केवल धार्मिक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक और कलात्मक दृष्टि से भी विशिष्ट पहचान रखता है। ब्रज की लोकसंस्कृति में संगीत और गायन का विशेष स्थान है, जिसके माध्यम से जनसामान्य अपनी धार्मिक भावनाओं, सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक मूल्यों को अभिव्यक्त करता आया है। इसी सांस्कृतिक परिदृश्य में समाज गायन एक सशक्त लोक देवालयी परंपरा के रूप में विकसित हुआ है। समाज गायन वस्तुतः सामूहिक भक्ति गायन की वह परंपरा है, जिसमें मंदिर या देवालय केंद्र के रूप में कार्य करता है और आसपास का समाज उसमें सक्रिय सहभागिता करता है। इसमें किसी एक गायक या कलाकार का नहीं, बल्कि पूरे समुदाय का स्वर मुखर होता है। यह परंपरा ब्रज के मंदिरों, ठाकुरजी के उत्सवों, अष्टयाम सेवा, झूलन, होली, जन्माष्टमी तथा अन्य धार्मिक अवसरों पर विशेष रूप से प्रचलित है। समाज गायन के माध्यम से भक्ति केवल व्यक्तिगत साधना न रहकर सामूहिक अनुभूति बन जाती है। ऐतिहासिक दृष्टि से समाज गायन की परंपरा का संबंध मध्यकालीन भक्ति आंदोलन से जुड़ा हुआ है, जब संतों और आचार्यों ने लोकभाषाओं में भक्ति काव्य की रचना कर जनसाधारण तक आध्यात्मिक भावनाओं को पहुंचाया। ब्रजभाषा में रचित पद, अष्टछाप कवियों की रचनाएँ तथा विभिन्न वैष्णव संप्रदायों के भक्ति गीत समाज गायन का प्रमुख आधार बने। राग, ताल और लय के माध्यम से ये पद देवालयी वातावरण में गाए जाते हैं, जिससे आध्यात्मिकता और सौंदर्य का अनूठा समन्वय उत्पन्न होता है। समाज गायन केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह ब्रज क्षेत्र की सामाजिक संरचना, सामूहिकता और सांस्कृतिक निरंतरता को भी सुदृढ़ करता है। इसमें विभिन्न वर्गों, आयु समूहों और सामाजिक पृष्ठभूमियों के लोग एक साथ सम्मिलित होकर भक्ति के माध्यम से समानता और एकता का अनुभव करते हैं। इस प्रकार समाज गायन ब्रज क्षेत्र में लोक और देवालय के बीच सेतु का कार्य करता हुआ एक जीवंत सांस्कृतिक परंपरा के रूप में आज भी प्रासंगिक बना हुआ है।

इसके साथ ही समाज गायन ब्रज क्षेत्र की मौखिक परंपरा को जीवित रखने का एक प्रभावी माध्यम भी है। लिखित ग्रंथों की अपेक्षा स्मृति, श्रवण और अभ्यास पर आधारित यह परंपरा गुरुदृशिष्य, वरिष्ठदकनिष्ठ तथा सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से आगे बढ़ती है। देवाल्यों में नियमित रूप से होने वाले समाज गायन के अभ्यास से न केवल भक्ति साहित्य का संरक्षण होता है, बल्कि संगीतात्मक अनुशासन, रागबोध और तालज्ञान भी सहज रूप से विकसित होता है। यह परंपरा लोकसंगीत को शास्त्रीय संगीत से जोड़ते हुए एक सेतु की भूमिका निभाती है। समाज गायन का सामाजिक पक्ष भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह ग्रामीण और कस्बाई जीवन में सामूहिकता की भावना को प्रबल करता है तथा समाज को सांस्कृतिक रूप से एकजुट रखता है। धार्मिक आयोजनों के दौरान समाज गायन के माध्यम से लोग अपनी दैनिक जीवन की चिंताओं से ऊपर उठकर आध्यात्मिक आनंद का अनुभव करते हैं। इससे सामाजिक सौहार्द, आपसी सहयोग और सांस्कृतिक पहचान को मजबूती मिलती है। विशेष रूप से ब्रज क्षेत्र में, जहाँ त्योहार और उत्सव सामूहिक रूप से मनाए जाते हैं, समाज गायन लोकजीवन की आत्मा के रूप में उभरता है। आधुनिक समय में तकनीकी विकास, शहरीकरण और बदलती जीवनशैली के कारण पारंपरिक लोक देवालयी परंपराओं के सामने अनेक चुनौतियाँ भी उपस्थित हैं। इसके बावजूद समाज गायन आज भी ब्रज क्षेत्र में अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। स्थानीय मंदिरों, धार्मिक संस्थाओं और सांस्कृतिक संगठनों द्वारा इसे संरक्षित और प्रोत्साहित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। शोध और प्रलेखन के माध्यम से भी इस परंपरा को समझने और आगे बढ़ाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इस अध्ययन का उद्देश्य ब्रज क्षेत्र में समाज गायन को एक लोक देवालयी परंपरा के रूप में समझना, उसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आयामों का विश्लेषण करना तथा समकालीन संदर्भ में उसकी भूमिका और चुनौतियों को रेखांकित करना है। इस प्रकार यह शोध न केवल ब्रज की सांस्कृतिक विरासत को उजागर करता है, बल्कि लोकसंगीत और सामुदायिक भक्ति परंपराओं के व्यापक अध्ययन में भी योगदान देने का प्रयास करता है।

ब्रज क्षेत्र और इसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

ब्रज क्षेत्र भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में भक्ति, लोकपरंपरा और संगीत का एक अत्यंत समृद्ध और जीवंत केंद्र रहा है। मथुरा, वृंदावन, गोवर्धन, बरसाना, नंदगांव तथा समीपवर्ती क्षेत्रों को श्रीकृष्ण की लीलास्थली के रूप में माना जाता है, जिसके कारण यहाँ की सांस्कृतिक चेतना में भक्ति एक केंद्रीय तत्व के रूप में विद्यमान है। ब्रज की संस्कृति लोकजीवन से गहराई से जुड़ी हुई है, जहाँ धार्मिक आस्था, पर्व त्योहार, संगीत और नृत्य सामूहिक जीवन का अभिन्न अंग हैं। ब्रज की लोकसंस्कृति में संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा, बल्कि यह धार्मिक अनुभूति, आध्यात्मिक साधना और सामाजिक एकता की अभिव्यक्ति का प्रभावशाली माध्यम रहा है। मंदिर, कुंज, घाट और चैपाल जैसे सार्वजनिक स्थल सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र रहे हैं, जहाँ सामूहिक गायन के माध्यम से भक्ति भाव को सजीव किया जाता रहा है [Sharma \(2008\)](#)। इसी सांस्कृतिक वातावरण में समाज गायन का विकास हुआ, जो ब्रज की सामूहिक धार्मिक चेतना का प्रतिनिधि रूप बन गया।

ब्रज में समाज गायन का ऐतिहासिक विकास

समाज गायन ब्रज क्षेत्र की भक्ति-संगीत परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसकी उत्पत्ति मध्यकालीन उत्तर भारत में हुई। यह गायन प्रणाली मुख्यतः वैष्णव भक्ति आंदोलन के प्रभाव में विकसित हुई, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति और सामाजिक समरसता पर जोर दिया गया। प्रारंभ में समाज गायन का प्रयोग ग्रामीण समुदायों और मंदिरों में धार्मिक आयोजनों और उत्सवों के दौरान भक्तिगीत प्रस्तुत करने के लिए होता था। इसकी विशेषता यह है कि यह केवल संगीत तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक और धार्मिक संदेशों का समावेश होता है, जिससे समुदाय में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का संवर्धन होता है।

समाज गायन का स्वरूप समय के साथ विकसित हुआ, जिसमें स्थानीय ब्रज भाषा और लोक धुनों का मिश्रण देखा गया। यह गायन न केवल भक्ति भाव की अभिव्यक्ति है, बल्कि ब्रज क्षेत्र के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का भी प्रतीक बन गया। मंदिरों में इसे नियमित अनुष्ठान का हिस्सा बनाया गया और ग्रामीण समाज में इसे सामूहिक धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान के रूप में अपनाया गया। आधुनिक समय में भी समाज गायन ने अपनी ऐतिहासिक पहचान को बनाए रखा है, जबकि इसकी शैली और प्रस्तुति में बदलाव आते रहे हैं, जो इसे आज भी ब्रज संस्कृति का जीवंत हिस्सा बनाता है।

समाज गायन की अवधारणा

समाज गायन से अभिप्राय उस सामूहिक भक्ति गायन परंपरा से है, जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों के लोग एक साथ मिलकर देवालयों में पद, भजन, कीर्तन और लीला पदों का गायन करते हैं। इसमें किसी एक गायक या कलाकार की प्रधानता नहीं होती, बल्कि पूरा समाज एक इकाई के रूप में सहभागी होता है। यही सामूहिकता समाज गायन की मूल विशेषता है। विद्वानों का मत है कि समाज गायन लोकधर्म और संस्थागत धर्म के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करता है, क्योंकि इसमें शास्त्रीय विधानों के साथ-साथ लोकभावनाओं का भी समन्वय होता है [Pandey \(2012\)](#)। ब्रज क्षेत्र में यह परंपरा मंदिर केंद्रित होने के कारण लोकदेवालयी स्वरूप ग्रहण कर लेती है, जहाँ देवालय केवल पूजा का स्थान न रहकर सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र बन जाता है।

समाज गायन और भक्ति आंदोलन

समाज गायन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए मध्यकालीन भक्ति आंदोलन का अध्ययन आवश्यक है। इस काल में वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभु तथा अन्य वैष्णव आचार्यों ने भक्ति को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए लोकभाषाओं और संगीत को माध्यम बनाया। ब्रजभाषा में रचित भक्ति पदों ने समाज के सभी वर्गों को भक्ति से जोड़ा। अष्टछाप कवियों सूरदास, नंददास, कुंभनदास आदि की रचनाएँ समाज गायन का प्रमुख आधार बनीं। इन पदों का सामूहिक गायन देवालयों में नियमित रूप से होने लगा, जिससे समाज गायन की परंपरा सुदृढ़ और संस्थागत हुई [Shukla \(1999\)](#)। भक्ति आंदोलन ने संगीत को ईश्वर प्राप्ति का सरल, सुलभ और भावनात्मक साधन माना, जिसने समाज गायन को व्यापक सामाजिक स्वीकार्यता प्रदान की।

समाज गायन और ब्रज भाषा

ब्रजभाषा को समाज गायन की आत्मा कहा जा सकता है। इसकी मधुरता, सरलता और भावप्रवणता इसे सामूहिक गायन के लिए अत्यंत उपयुक्त बनाती है। ब्रजभाषा में रचित पदों में श्रृंगार, वात्सल्य और भक्ति रस की प्रधानता मिलती है, जो श्रीकृष्ण भक्ति को अत्यंत सजीव और अनुभूतिपरक बनाती है। ब्रजभाषा की सहजता के कारण समाज गायन में विद्वान और सामान्य जन समान रूप से भाग ले सकते हैं। भाषा और संगीत का यह संयोजन समाज गायन को लोकमानस से गहराई से जोड़ता है और इसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरित होने योग्य बनाता है [Mishra \(2010\)](#)। इस प्रकार ब्रजभाषा समाज गायन की सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मंदिर परंपरा में समाज गायन

ब्रज क्षेत्र के मंदिर समाज गायन के प्रमुख केंद्र रहे हैं। यहाँ अष्टयाम सेवा, उत्सवों, झूलन, रासलीला, होली और जन्माष्टमी जैसे पर्वों पर समाज गायन अनिवार्य अंग के रूप में सम्मिलित होता है। देवालयी वातावरण में सामूहिक गायन से धार्मिक अनुभूति और अधिक गहन तथा प्रभावशाली हो जाती है। मंदिर आधारित समाज गायन ने लोकसंगीत को संरक्षित रखने और उसे धार्मिक अनुशासन से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शोधकर्ताओं का मानना है कि देवालयी परंपरा ने समाज गायन को केवल सांस्कृतिक गतिविधि न रहकर एक अनुशासित धार्मिक अनुष्ठान का स्वरूप प्रदान किया [Singh \(2015\)](#)। इससे इसकी निरंतरता और पवित्रता बनी रही।

समाज गायन का सामाजिक महत्व

समाज गायन केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि यह सामाजिक एकता और समरसता का भी सशक्त माध्यम है। इसमें जाति, वर्ग, आयु और आर्थिक स्थिति के भेद गौण हो जाते हैं और सभी लोग एक स्वर में भक्ति करते हैं। यह सामूहिक सहभागिता समाज में समानता और भाईचारे की भावना को प्रबल करती है। ग्रामीण और कस्बाई समाज में समाज गायन सामूहिक पहचान को मजबूत करता है तथा सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में सहायक होता है। विद्वानों के अनुसार समाज गायन

सामाजिक संरचना को स्थिरता प्रदान करता है और लोकसंस्कृति को जीवंत बनाए रखता है Verma (2014)। इस प्रकार यह परंपरा सामाजिक और सांस्कृतिक दोनों स्तरों पर महत्वपूर्ण है।

समाज गायन का स्वरूप

समाज गायन एक ऐसी परंपरा है जिसमें समुदाय के सभी वर्ग, आयु और सामाजिक पृष्ठभूमि के लोग मिलकर सामूहिक रूप से भजन, पद, कीर्तन और लीला गीत गाते हैं। यह व्यक्तिगत प्रदर्शन पर आधारित नहीं होता, बल्कि सामूहिक सहभागिता और समुदाय की भावनाओं को अभिव्यक्त करता है। समाज गायन का उद्देश्य केवल भक्ति प्रकट करना नहीं है, बल्कि यह सामाजिक एकता, सांस्कृतिक निरंतरता और धार्मिक चेतना को बनाए रखने में भी सहायक है Pandey (2012)। ब्रज क्षेत्र के मंदिर और सार्वजनिक स्थल इस परंपरा के केंद्र रहे हैं, जहाँ नियमित रूप से सामूहिक भक्ति गायन होता है। इससे लोग न केवल आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करते हैं, बल्कि समाज के अन्य सदस्यों के साथ सामूहिक बंधन और सहयोग की भावना भी विकसित होती है।

समाज गायन में संगीत, राग, ताल और भावात्मक प्रस्तुति का संयोजन इसे केवल धार्मिक अनुष्ठान न बनाकर एक जीवंत सांस्कृतिक गतिविधि बनाता है। इस प्रक्रिया में प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी महत्वपूर्ण होती है, जिससे परंपरा पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित रहती है।

आधुनिकता, शहरीकरण और तकनीकी विकास के कारण पारंपरिक लोकदेवालयी परंपराओं पर दबाव पड़ा है। इसके बावजूद समाज गायन ब्रज क्षेत्र में जीवंत बना हुआ है। मंदिर, सांस्कृतिक संस्थाएँ और शोधकर्ता इसके संरक्षण और प्रलेखन के प्रयास कर रहे हैं Tripathi (2018)। डिजिटल मीडिया, ऑनलाइन मंच, मोबाइल ऐप और अकादमिक शोध के माध्यम से समाज गायन की पहुँच बढ़ रही है। इसका लाभ यह हुआ कि युवा पीढ़ी भी इस परंपरा से जुड़ रही है। समाज गायन न केवल भक्ति का साधन है, बल्कि यह ब्रज क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान, लोकधार्मिक चेतना और सामूहिक सामाजिक जीवन को बनाए रखने का प्रमुख माध्यम है। इसका संरक्षण भविष्य में भी ब्रज की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत के संवर्धन के लिए आवश्यक है।

समकालीन चुनौतियाँ और समाज गायन का डिजिटल संरक्षण

समाज गायन, जो ब्रज क्षेत्र की पारंपरिक भक्ति-संगीत परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा है, आज कई आधुनिक चुनौतियों का सामना कर रहा है। शहरीकरण, युवाओं की बदलती रुचियाँ और ग्लोबलाइजेशन के प्रभाव ने इस परंपरा को सीधे तौर पर प्रभावित किया है। कई ग्रामीण और छोटे मंदिरों में अब यह गायन नियमित रूप से नहीं किया जाता, और नए पीढ़ी के कलाकार इसे सीखने और आगे बढ़ाने में कम रुचि दिखा रहे हैं। इसके अलावा, पारंपरिक समाज गायन की शैली और धुनों का मौखिक संचार पर निर्भर होना इसे लुप्त होने के खतरे में डाल रहा है। इसके परिणामस्वरूप, समाज गायन की शुद्धता और सांगीतिक विविधता भी धीरे-धीरे प्रभावित हो रही है।

इस परंपरा के संरक्षण के लिए डिजिटल तकनीकों का उपयोग एक प्रभावी उपाय साबित हो रहा है। संगीत रिकॉर्डिंग, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, और डिजिटल आर्काइविंग से समाज गायन को व्यापक दर्शक और शोधकर्ताओं तक पहुँचाया जा सकता है। मोबाइल एप्स, यूट्यूब चैनल और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने इसे वैश्विक स्तर पर साझा करने और युवा पीढ़ी में रुचि उत्पन्न करने के अवसर दिए हैं। साथ ही, डिजिटल शिक्षा और ऑनलाइन वर्कशॉप के माध्यम से नए कलाकारों को प्रशिक्षण देकर इस परंपरा को जीवित रखा जा सकता है। इस तरह, आधुनिक चुनौतियों के बावजूद समाज गायन की सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान को बनाए रखना अब तकनीकी साधनों के माध्यम से संभव हो गया है। इसके अतिरिक्त, स्थानीय समुदायों और मंदिरों के सहयोग से सांस्कृतिक आयोजनों और प्रतियोगिताओं का आयोजन भी इस परंपरा को संरक्षित रखने में मदद कर सकता है।

निष्कर्ष

ब्रज क्षेत्र में समाज गायन न केवल एक धार्मिक परंपरा है, बल्कि यह सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह परंपरा ब्रज के मंदिरों और देवालयों के केंद्रों से विकसित होकर समाज के सभी वर्गों के लिए सामूहिक भक्ति और सांस्कृतिक चेतना का माध्यम बन गई है। समाज गायन में व्यक्तिगत प्रदर्शन के स्थान पर सामूहिक सहभागिता को महत्व दिया जाता है, जिससे यह एक ऐसी जीवंत लोकदेवालयी परंपरा बनती है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरित होती रही है। इतिहास में भक्ति आंदोलन, अष्टछाप कवियों और ब्रजभाषा की रचनाओं ने समाज गायन को संरचना और दिशा प्रदान की। संगीत, राग, ताल और भावपूर्ण भाषा ने इसे न केवल धार्मिक अनुभव का साधन बनाया, बल्कि सामाजिक एकता और सामूहिक पहचान का भी संवाहक बनाया। देवालयों में इसके आयोजन से लोगों को आध्यात्मिक अनुभव, सामूहिक आनंद और सामाजिक समरसता का अवसर प्राप्त होता है। आज के आधुनिक और शहरी परिवेश में भी समाज गायन अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। डिजिटल मीडिया, अकादमिक शोध और सांस्कृतिक संस्थानों के संरक्षण के प्रयासों से यह परंपरा जीवित और सजीव बनी हुई है। समाज गायन केवल भक्ति का साधन नहीं है, बल्कि यह ब्रज क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान, लोकधार्मिक चेतना और सामूहिक सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ब्रज क्षेत्र में समाज गायन एक ऐसी लोकदेवालयी परंपरा है जो धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से बहुआयामी महत्व रखती है। यह न केवल भक्ति को सामूहिक अनुभव में बदलता है, बल्कि सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक निरंतरता और लोकसंगीत के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज गायन की यह जीवंत परंपरा भविष्य में भी ब्रज की सांस्कृतिक धरोहर के संवर्धन और संरक्षण का मार्ग प्रशस्त करेगी।

REFERENCES

Mishra, K. (2010). *Braj Bhasha and Bhakti Poetry (ब्रजभाषा और भक्ति काव्य)*. Braj Prakashan, 1(1).

- Pandey, S. (2012). Folk Religion and Indian Society (लोकधर्म और भारतीय समाज). Sahitya Bhavan, 1(1).
- Sharma, R. (2008). Folk Culture of Braj (ब्रज की लोक संस्कृति). Lokbharti Prakashan, 1(1).
- Shukla, R. C. (1999). History of Hindi Literature (हिंदी साहित्य का इतिहास). Nagari Pracharini Sabha, 1(1).
- Singh, A. (2015). Traditions of Indian Folk Music (भारतीय लोक संगीत परंपराएं). Orient Blackswan, 1(1).
- Tripathi, R. (2018). Folk Traditions of the Braj Region (ब्रज क्षेत्र की लोक परंपराएं). Concept Publishing Company, 1(1).
- Verma, S. (2014). Folk Culture and Society (लोक संस्कृति और समाज). Rawat Publications, 1(1).
- Chaturvedi, R. (2011). Bhakti Tradition and Music of Braj (ब्रज की भक्ति परंपरा और संगीत). Vani Prakashan, 1(1).
- Ghosh, M. (2016). Indian Folk Music and Bhakti Traditions (भारतीय लोक संगीत और भक्ति परंपराएं). Sage Publications, 1(1).
- Bhattacharya, N. (2013). Temples and Community Life in Braj (ब्रज में मंदिर और कम्युनिटी लाइफ). Indian Council of Historical Research, 1(1).
- Tiwari, V. (2009). Cultural and Religious History of the Braj Region (ब्रज क्षेत्र का सांस्कृतिक और धार्मिक इतिहास). Motilal Banarsidass, 1(1).
- Joshi, A. (2012). Rasa, Bhakti and Folk Singing (रस, भक्ति और लोक गायन). Delhi University Press, 1(1).
- Kumar, S. (2017). Festivals and Folk Traditions of Braj (ब्रज के फेस्टिवल और लोक परंपराएं). Aryan Books International, 1(1).
- Singh, D. (2019). Cultural Study of Haryanvi and Braj Folk Songs (हरियाणवी एवं ब्रज लोक गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन). Shri Natraj Prakashan, 1(1).